वातावरण स्वास्थ्यवर्धक बना रहे।

- गर्मियों में स्टॉकिंग दरे कम करे। चारा दिन के ठन्डे समय (सुबह –शाम) में देना चाहिए।

प्रजनन प्रबंधन

- बाछियों का वजन और ऊंचाई उसकी नस्ल के अनुसार होनी चाहिए।
- बाछियों में यौवनावस्था, यौनपरिपक्वता तथा पहली ब्यात के समय लगभग 40, 60 तथा 80 प्रतिशत परिपक्व शरीर के भार प्राप्त कर लेता है।
- पशुपालक को मद की शुरूआती अवस्था एवं मद की वास्तविक अवस्था के व्यवहार सम्बन्धी लक्षणों के फर्क की सही जानकारी होनी चाहिए।
- बछिया जब मद/हीट में आए तो उसके लक्षणों को पहचान करे जैसे बार–बार मूत्र श्राव करना, अन्य पशुओं पर चढ़ना, रम्भाना आदि।
- पशु के योनि द्वार से पारदर्शी तरल श्लेष्मा का स्राव होता है ।
- पशु की योनि द्वार में सजून हो जाती है तथा योनि के श्लेष्मा झिल्ली में रक्त सचांर बढ़ने से वो गुलाबी अथवा लाल दिखाई देती है।
- गर्भधारण के बाद, बछिया को विशेष देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होती है।

नस्ल	यौवनावस्था (महीना)	यौनपरिपक्वता (महीना)	प्रथम ब्यात की आयु (महीना)
संकर गाय	12–15	15–18	24–30
देशी गाय	20–24	24–30	36–40
भैंस	20–24	24–36	36–42

स्वास्थ्य प्रबंधन

- बाछियों के स्वास्थ्य की नियमित जांच होनी चाहिए।
- बाछियों को नियमित रूप से कीड़े की दवा देनी चाहिए।
- बाछियों को बीमारियों से बचने के लिए नियमित रूप से टीकाकरण करना चाहिए।

बाछियों का टीकाकरण कार्यक्रम

टीका का नाम (बीमारी)	पहला डोज	बाद में
खुरपका एवं मुंहपका रोग	4 माह	साल में दो बार
गलघोंटू – लंगड़ी बुखार	4 माह	साल एक बार
ब्रूसेल्लोसिस	4–8 महीने के उम्र के केवल बाछियों को (जीवन में एक बार)	जीवन में एक बार

निष्कर्ष:– बछड़ो एवं बाछियों के बेहतर प्रबंधन, संतुलित आहार, आवास एंव उतम स्वास्थ्य से यौवनवस्था तथा यौन परिपक्वता की उम्र को कम करने में सकारात्मक प्रभाव होता है। नवजात बछड़ो के विकास के लिए खीस पिलाया जाना अति आवश्यक है। अगर यौवनवस्था एवं यौन परिपक्वता की उम्र कम होगी तो पशु कम उम्र में ही गर्भ धारण कर सकता है जिससे पशुपालक एक पशु से अधिक ब्यात एंव अधिक दूध उत्पादन कर डेरी व्यवसाय से अधिक लाभ कमा सकते हैं।

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा
दीप नारायण सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुधन प्रक्षेत्र परिसर
योगेन्द्र सिंह जादौन, उपनिदेशक प्रसार शिक्षा

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/69/2026/DEE/BASU-Patna

नवजात एवं ओसर पशु प्रबंधन

आलेख:

रंजना सिन्हा, दीप नारायण सिंह,
योगेन्द्र सिंह जादौन एवं मनमोहन कुमार

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

नवजात एवं ओसर पशु प्रबंधन

किसी भी डेयरी फार्म की सफलता के लिए अच्छे आनुवंशिक गुणों वाले बछड़े एवं बछड़ियों का होना अत्यंत आवश्यक है। आज के बछड़े और बछड़ियाँ ही भविष्य के सांड और दूध देने वाली गाय बनेंगी। वयस्क पशुओं से उच्च उत्पादन क्षमता प्राप्त करने की नींव नवजात एवं ओसर पशुओं के प्रबंधन पर आधारित होती है। जन्म के तुरंत बाद नवजात पशुओं का उचित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि वे बाहरी वातावरण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। यदि इस समय उचित देखभाल न हो तो उसकी मृत्यु दर बढ़ सकती है या वह कमजोर होकर भविष्य में कम उत्पादन देने वाला पशु बन सकते है। 20 से 25 प्रतिशत बछड़ों की मृत्यु उनके जन्म के पहले 7 से 8 सप्ताह के भीतर ही हो जाती है।

ब्यात के समय नवजात की देखभाल

- जन्म के तुरंत बाद बछड़े के मुंह, नाक, आंख, कान और शरीर में लगी झिल्ली को अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए। आमतौर पर गाय बछड़े को जन्म देते ही उसे जीभ से चाटने लगती है। इससे बछड़े के शरीर को सूखने में आसानी होती है और श्वसन तथा रक्त संचार सुचारू होता है।
- अगर नवजात बछड़े की श्वसन प्रक्रिया शुरू नहीं होती है तो कृत्रिम तरीके से तुरंत ही उसकी सांस लेने की क्रिया को आरम्भ करना चाहिए।
- माँ को बछड़े को चाटने दे, जिससे रक्त संचार उत्तेजित होता है।
- गाय के थन को अच्छी तरह साफ कर नवजात बछड़े को आधे घंटे के अंदर खीस पिलाये जिसकी मात्रा बच्चे के वजन का दसवां भाग के बराबर होनी चाहिए।
- नाभी नाल को शरीर से 2–3 सेमी की दूरी पर गांठ बांध देनी चाहिए और बांधे हुए स्थान से 1 सेमी नीचे से काट कर टिंक्चर आयोडीन या बोरिक एसिड अथवा कोई भी अन्य एंटीसेप्टिक लोशन लगाना चाहिए।
- नयमित रूप से बछड़े के वजन का ब्योरा रखना चाहिए।

नवजात बछड़ो में खीस का महत्त्व

- सामान्य दूध की तुलना में खीस में प्रोटीन व विटामिन की मात्रा क्रमशः 4–5 गुना तथा 10–15 गुना अधिक होती है।
- खीस इम्मुनोग्लोविन्स का मुख्य स्त्रोत है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।
- बछड़ो में सामान्यतः होने वाली बिमारियों जैसे डायरिया और न्यूमोनिया को रोकने में भी खीस मुख्य भूमिका अदा करता है।
- खीस में उपस्थित हार्मोन व विकास कारक तत्व, बछड़ो के वृद्धि एवं स्वास्थ्य के लिए उत्तरदायी होते है।
- विशेष परिस्थितियों में कृत्रिम खीस की आवश्यकता होती है। कृत्रिम खीस बनाने के लिए ताजा दूध 1000 मिली, अंडा, 55–60 ग्राम, दो चम्मच अरंडी का तेल इस्तेमाल किया जा सकता है।

बछड़ो को दूध पर पालना

जन्म के बाद खीस के अतिरिक्त बछड़े को 3 से 4 सप्ताह तक मां के दूध की आवश्यकता होता है। बछड़ो को 5 दिनों के बाद उसके माँ का दूध देते है, बछड़े या बछड़ियों को शरीर के वजन के अनुसार दूध देना चाहिए जिससे उनका उचित शारीरिक विकास हो सके।

6–20 दिन तक – 1/10 शरीर के भार का

21–30 दिन तक – 1/15 शरीर के भार का

31–60 दिन तक – 1/20 शरीर के भार का

दुग्ध एंव दुग्ध प्रतिस्थापक

- दूध की अनुपलब्धता में हमें बछड़ो को दुग्ध प्रतिस्थापक देना चाहिए, जो गुणवत्ता के मामले में दूध के बराबर हो।
- दूध के विकल्प मूलरूप से मलाई रहित दुग्ध पाउडर, वनस्पति प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट तथा खनिज लवण से बनाया जाता है।
- इसमें कुछ खनिजो और विटामिनों के साथ ग्लूकोज, सोयाबिन का आटा तथा अनाज के आटे समानुपतिक रूप से मिलाया जाता है, यदि अच्छी गुणवता का दूध प्रतिस्थापक उपलब्ध हो तो दूध के जगह पर इसे पिला सकते है।

बछड़ा स्टॉटर

- बछड़ा स्टार्टर वह शुष्क आहार है, जो रूमेन और शरीर के विकास तथा बछड़े एवं बाछियों को दूध छुड़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- बछड़ा स्टार्टर स्वादिष्ट और पौष्टिक होना चाहिए जिसमें 22–24 प्रतिशत प्रोटीन तथा 70–75 प्रतिशत उर्जा होती है।
- बछड़े को बछड़ा स्टॉटर दूसरे सप्ताह से शुरू कर देना चाहिए और लगभग 12 सप्ताह तक देना चाहिए।
- बछड़ा स्टार्टर के साथ रेशेदार चारा रूमेन का विकास तथा माइक्रोवियल किण्वन की प्रारंभिक प्रक्रिया की शुरूआत करने में मदद करता है।

अच्छा ओसर (हीफर) तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

बछिया के सही समय पर गर्भधारण के लिए उसका समय पर विकास और उपयुक्त ब्रीडिंग वजन प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए बछिया की 3 महीने से कम आयु से ही सही पोषण और प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए, जैसे पशु का आवास प्रबंधन, उसका पोषण, प्रजनन और स्वास्थ्य प्रबंधन शामिल है।

आहार प्रबंधन

तीन महीने की उम्र के बाद सामान्य स्तर पर 60–70 किलोग्राम का वजन मिलता है। इस चरण में रूमेन कार्यात्मक रूप से विकसित हो जाता है। इसलिए इसके आहार में मुख्य रूप से रेशेदार चारा, हरी घास तथा संघनित आहार संतुलित रूप में देना चाहिए। जिससे गाय की बाछियों में कम से कम औसत वृद्वि दर 350 से 450 ग्राम तथा भैंस में 450 से 500 ग्राम प्रतिदिन को सुनिश्चित किया जा सके। बछिया को स्वस्थ रहने और अच्छी तरह से विकसित होने के लिए पर्याप्त और संतुलित आहार की आवश्यकता होती है।

आवास प्रबंधन

- बछिया को साफ–सुथरे और सूखे स्थान में रखना चाहिए जहां उचित मात्रा में रोशनी आ रही हो तथा वहां नमी, गन्दगी और सीलन न हो। बाड़े में आवश्यकतानुसार ब्लीचिंग पाउडर या फिनाइल या चूना का छिड़काव करना चाहिए। एक बाड़े में अधिकतम 30 बछडियों रखना चाहिए। जिससे उन्हें संक्रमण और बीमारियों से बचाया जा सके।
- गर्मी के मौसम में शेड का तापमान को प्रतिदिन देखना चाहिए तथा तापमान के उतार चढ़ाव का रिकार्ड रखना चाहिए। आवास में हमेशा साफ ताजा पानी भरपूर मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए। आवास में ताज़ी हवा का प्रवाह होते रहना चाहिए,
- बाछियों के आवास में पर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश और ताजे हवा का प्रबंध होना चाहिए ताकि